DESALITE NEWSLETTER

sancharan

March 2019 **Newsletter by the Department of Hindi** **SFS / Hindi 01 / Mar 2019**

भारतीय संविधान में **14 September 1949 को हिन्दी की देवनागरी लिपि को अधिकारिक तौर** पर मान्यता प्रदान की गई है। इसलिए 14 सितम्बर को हर साल "हिन्दी दिवस" भी मनाया जाता है।

हिन्दी संस्कृत का अपभ्रंश है। संस्कृत को देवों की भाषा भी कहा जाता है। हिन्दी और संस्कृत दोनों को देवनागरी लिपि में ही लिखा जाता है। देवनागरी लिपि का मतलब होता है देवों के यहां लिखी जाने वाली लिपि।

Inside this issue:

विभागाध्यक्ष संदेश	I
पृथ्वीराज चौहान	I
गंगा नदी का जन्म	2
खोई हुई छाया	2
बाल मजदूरी	3
उम्र	3
बढ़ते कदम	6

विभागाध्यक्ष संदेश

मेरे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि हमारा महाविद्यालय अर्धवार्षिक समाचार पत्रिका प्रकाशित कर रहा है I पत्रिका विद्यालय की दर्पण होती है I विद्यालय में मात्र शिक्षण ही नहीं होता अपितु छात्रों का सर्वांगीण विकास के लिए अनेक गतिविधियाँ वर्ष पर्यंत चलती रहती हैं | इस पत्रिका के माध्यम से पाठकगण अवगत हो सकेंगे कि विद्यालय में अनेक प्रतियोगितों का आयोजन होता है जिस में विद्यार्थी भाग लेते हैं और अपनी प्रतिभाओं को निखारते हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे विद्यार्थी भविष्य में प्रबुद्ध देशभक्त एवं विविध कौशलों से परिपूर्ण हो कर सभ्य नागरिक बनेंगे एवं समाज और देश के विकास में अपना यथा संभव सक्रिय योगदान देकर अपने मानव जीवन को सफ़ल बनायेगे |

इस समाचार पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग करने वाले सभी विद्यार्थीगण एवं शिक्षकविदों का में हार्दिक धन्यवाद देती हूँ I

डॉ.रेवा प्रसाद
हिंदी विभागाध्यक्ष

पृथ्वीराज चौहान

दिल्ली के राज-सिंहासन पर बैठने वाले चौहान राजवंश के अंतिम शासक पृथ्वीराज चौहान का जन्म वर्ष 1168 में ,अजमेर के राजा सोमेश्वर चौहान के यहाँ एक पुत्र के रूप में हुआ था। पृथ्वीराज चौहान एक प्रतिभाशाली बालक थे ,जो सैन्य कौशल सीखने में बहुत ही निपुण थे। पृथ्वीराज चौहान में आवाज के आधार पर निशाना लगाने की कुशलता थी। जब वर्ष 1179 में पृथ्वीराज के पिता की एक युद्ध में मृत्यु हो गई थी ,तब पृथ्वीराज ने 13वर्ष की उम्र में अजमेर के राजगढ़ की गद्दी को संभाला था। पृथ्वीराज के दादा अंगम दिल्ली के शासक थे। उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के साहस और बहादुरी के बारे में सुनने के बाद ,उन्हें दिल्ली के सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। पृथ्वीराज ने एक बार बिना किसी हथियार के अकेले ही एक शेर को मार डाला था। पृथ्वीराज चौहान को एक योद्धा राजा के रूप में जाना जाता था।

जब पृथ्वीराज चौहान दिल्ली के राज-सिंहासन की गद्दी पर बैठे ,तब उन्होंने किला राय पिथौरा का निर्माण कराया। पृथ्वीराज का संपूर्ण जीवन वीरता ,साहस, शौर्यवान और निरंतर महत्वपूर्ण कार्य करने की एक श्रृंखला में बँधा था। जब पृथ्वीराज चौहान केवल तेरह वर्ष के थे ,तब उन्होंने गुजरात के पराक्रमी शासक भीमदेव को पराजित किया था।

पृथ्वीराज चौहान के शत्रु जयचंद की बेटी संयुक्ता

के साथ उनकी प्रेम कहानी बहुत ही प्रसिद्ध है। पृथ्वीराज चौहान उसके ' स्वयंवर ' के दिन ही उसको साथ में लेकर चले गए थे।

पृथ्वीराज चौहान जिस समय अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे थे ,उस समय वर्ष 1191 में मोहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण कर दिया था और तराइन के पहले युद्ध में गोरी पराजित हो गया था। मोहम्मद गोरी की पराजित होने वाली सेना पर हमला करने के लिए कहा गया ,लेकिन पृथ्वीराज चौहान ने असली राजपूत परंपरा का पालन करने के लिए ऐसा करने से इनकार कर दिया ,क्योंकि पीठ पीछे हमला करना निष्पक्ष युद्ध नियमों के अनुरूप नहीं था। परिणामस्वरूप ,मोहम्मद गोरी ने फिर से भारत पर आक्रमण किया और तराइन के द्वतीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को पराजित करके बंदी बना लिया। पृथ्वीराज चौहान के साथ काफी बुरा व्यवहार किया गया था, क्योंकि उसने पृथ्वीराज चौहान की आँखों में लाल गर्म लोहे की छड़ डालकर उन्हें अंधा बना दिया था। लेकिन पृथ्वीराज चौहान ने अपना साहस नहीं खोया। उन्होंने अपने दरबारी कवि और मित्र चंदबरदाई की सहायता से" शब्दभेदी बाण "के जरिए मुहम्मद गोरी को मारने की योजना बनाई। पृथ्वीराज चौहान के द्वारा आवाज के आधार पर निशाना लगाने का उनका यह हुनर काफी काम आया। पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी के द्वारा आयोजित तीरंदाजी प्रतियोगिता के दौरान अपने कौशल को प्रदर्शित किया। जब मोहम्मद गोरी ने उनकी प्रशंसा की तब उन्होंने उसकी आवाज सुनकर शब्दभेदी बाण चला दिया और मोहम्मद गोरी को मार गिराया। शत्रुओं के हाथों मरने से बचने के लिए पृथ्वीराज चौहान और उनके मित्र चंदबरदाई ने एक दूसरे को मार दिया था।

संकल्प जी

बीकॉम'- E'

गंगा नदी का जन्म

राजा सागर नाम का एक राजा था ,जिसने जादुई तरीके से साठ हजार पुत्रों की प्राप्ति की थी।एक दिन राजा सागर ने अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए एक यज्ञ किया। इस यज्ञ के लिए एक घोड़े की आवश्यकता पड़ती थी और घोड़े को खुला छोड़ दिया जाता था। घोड़ा जिस किसी राज्य में जाकर रुक जाता था, वह राज्य यज्ञ करने वाले राजा का हो जाता था।इसी तरह राजा सागर के यज्ञ में भी घोड़ा छोड़ दिया गया ।देव वेंद्र को चिंता होने लगती है कि यदि यह घोड़ा स्वर्ग में पहुंच गया तो स्वर्ग राजा सागर का हो जाएगा। इसलिए इंद्र ने घोड़ा पकड़कर एक ऋषि के समीप बांध दिया ताकि राजा को इस बात का पता ना चले कि घोड़े को इंद्र ने चुराया था।कुछ देर के बाद राजा को पता चल गया कि किसी ने उसके घोड़े को पकड़ लिया। उसने अपने साठ हजार पुत्रों को घोड़ा ढूंढने के लिए भेज दिया ।सागर के पुत्रों ने कुछ समय के बाद पता लगाया कि घोड़ा किसी ऋषि के आश्रम में बंधा हुआ है ।वहां ऋषि ध्यान मुद्रा में खोए हुए थे। राजा के पुत्रों ने उस ऋषि को ध्यान मुद्रा से जगा दिया और उसका अपमान करने लगे।ऋषि ने अपनी तपस्या को भंग करने की वजह से गुस्से में आकर राजा के सभी पुत्रों को अग्नि में भस्म कर दिया। सागर के पुत्रों की आत्माएं भटकने लगी ।राजा सागर ने अपने पुत्रों की आत्माओं की मुक्ति के लिए कई प्रयास किए परंतु असफल हुए।इसके बाद समय गुजरता गया। आखिर भागीरथ नामक राजा का जन्म हुआ। उन्होंने अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए गंगा को पृथ्वी पर लेकर आने का निश्चय किया ताकि अस्तियों को गंगा के जल में प्रवाहित किया जाए ।भागीरथ राजा, सागर राजा के पोते थे।भागीरथ राजा ने ब्रह्मा जी की घोर तपस्या की। ब्रह्मा जी कई वर्षों के बाद भागीरथ की भक्ति से प्रसन्न होकर उनके सामने प्रकट हुए। तब भागीरथ ने ब्रह्मा जी से गंगा को धरती पर लाने का वरदान मांगा, परंतु गंगा का वेग इतना ज्यादा था कि यदि वह स्वर्ग से धरती पर आएगी तो धरती गंगा में ही समा जाएगी। तब भागीरथ ने भगवान शिव से निवेदन किया कि वह गंगा को अपनी जटाओं में बांध कर उसका धरती पर जाने का वेट कम करें। इस तरह शिव ने गंगा के प्रवाह को अपनी जटाओं में लेकर उसका धरती पर जाने का वेग कम किया ।इस तरह पृथ्वी पर गंगा का जन्म हुआ। इसलिए गंगा को 'भागीरथ कीबेटी' भी कहा जाता है।

वैष्णवी स्वरुप
बीकॉम-'A' प्रथम वर्ष

खोई हुई छाया

भोर का समय.....
चल रही थी मैं सड़क पर
शायद कहीं जा रही थी दूर तक
हां, अकेली जाने की कोशिश थी
चंद्रमा का उजाला फैला हुआ है
रात-भर पूरा आकाश घूमता रहा
फिर भी पता नहीं, क्यों?
वह तो अब तक न निकला अपना घर
अरे...! उल्लू कहीं का, सुन यार....
यह आवाज...
ओह!! छाया है मेरी
चाहत का तो घर कहां?
आसमान ही है पूरा का पूरा
तब तो मेरा भी घर नहीं
दुनिया है, ना पूरी की पूरी
तेरा भी घर है दुनिया
उनका भी घर है दुनिया
सब का ही घर है दुनिया
पता नहीं, आप किस से पूछू?
अरी छाया, तू सदा साथ क्यों मेरी ?
कभी आगे ....कभी पीछे .....
अरे वाह ! और कोई है क्या ?
चलने को तेरे साथ
मौन..... शांत.....
अरी छाया तू जरा देख
कोई और भी है ...
छाया के पीछे दूसरी छाया, पर
किसकी है, यह तो पता नहीं
ज्यादा लंबा है, थोड़ा मोटा भी।
छाया वह तो हमारे पास आ रहा है।
अब दो-दो छायाएं हैं
एक आगे .....एक पीछे....
वह छाया मेरी छाया को
क्यों खींच रहा है ?
कुछ भी पता नहीं चल रहा है।
अचानक .....
दो छायाएं जुड़ गई ,जबरदस्ती
खामोश.... शून्य.... अब ....
चांद तो आराम करने चला गया
उषा की लालिमा चारों ओर
उसको भी चुनौती देती हुई।
बह रही है ,खून सड़क पर
यहां, इस किस्से का अंत होना है।

प्रथीशा . आर
बीए, प्रथम वर्ष

- *हिंदी भाषा मॉरिशस, फिजी, सुरीनाम, त्रिनिदाद और टोबेगो में भी बोली जाती है।*
- *1805 में छपी लल्लू लाल की किताब 'प्रेम सागर' को हिंदी की पहली किताब माना जाता है. इस किताब में भगवान कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है।*
- ***गूगल** ने कहा है कि **इंटरनेट** पर हिंदी कंटेंट की मांग अब बढ़ना शुरू हो गई है. यह साल-दर-साल English कंटेंट के 19 प्रतिशत वृद्धि के मुकाबले **94 प्रतिशत** बढ़ती जा रहीं है.*

बाल मजदूरी

अपने देश के लिए सबसे जरूरी संपत्ति के रूप में बच्चों को संरक्षित किया जाता है जबकि इनके माता-पिता की गलत समझ और गरीबी की वजह से बच्चे देश की शक्ति बनने की बजाय देश की कमजोरी का कारण बन रहे हैं।बच्चों के कल्याण के लिए कल्याणकारी समाज और सरकार की ओर से बहुत सारे जागरूकता अभियान चलाने के बावजूद गरीबी रेखा के नीचे के ज्यादातर बच्चे रोज बाल मजदूरी करने के लिए मजबूर होते हैं।किसी भी राष्ट्र के लिए बच्चे नए फूल की शक्तिशाली खुशबू की तरह होते हैं जबकि कुछ लोग थोड़े से पैसों के लिए गैरकानूनी तरीके से इन बच्चों को बाल मजदूरी के कुएं में धकेल देते हैं साथ ही देश का भी भविष्य बिगाड़ देते हैं ।ऐसे बच्चों को बचाने की जिम्मेदारी देश के हर नागरिक की है यहां एक सामाजिक समस्या है जो लंबे समय से चल रही है और इसे जड़ से उखाड़ने की जरूरत है।देश की आजादी के बाद इस को जड़ से उखाड़ने के लिए कई सारे नियम कानून बनाए गए लेकिन कोई भी प्रभावी साबित नहीं हुआ इससे सीधे तौर पर बच्चों के मानसिक ,शारीरिक ,सामाजिक और बौद्धिक क्षमताओं का विनाश हो रहा है। बच्चे प्रकृति की बनाई एक प्यारी कलाकृति हैं लेकिन यह बिल्कुल भी सही नहीं है कि कुछ बुरी परिस्थितियों की वजह से बिना सही उम्र में पहुंचे उन्हें इतना कठिन श्रम करना पड़े।बाल मजदूरी एक वैश्विक समस्या है। गरीबी रेखा के नीचे के लोग अपने बच्चों की शिक्षा का खर्च वाहन नहीं कर पाते हैं और जीवन यापन के लिए ही जरूरी पैसे नहीं कमा पाते हैं ।इसी वजह से वह अपने बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय कठिन श्रम में शामिल कर लेते हैं ।वह मानते हैं कि बच्चों को स्कूल भेजना समय की बर्बादी है और कम उम्र में पैसा कमाना परिवार के लिए अच्छा होता है। बाल मजदूरी के बुरे प्रभावों से गरीब के साथ साथ अमीर लोगों को भी तुरंत अवगत करने की जरूरत है।उन्हें हर तरह की संसाधनों की उपलब्धता कर आनी चाहिए जिसकी उन्हें कमी है। अमीरों को गरीबों की मदद करनी चाहिए जिससे उनके बच्चे सभी जरूरी चीजें अपने बचपन में पा सके। इस को जड़ से मिटाने के लिए सरकार को कड़े नियम कानून बनाने की जरूरत है।

अभिषेक गौरव
बीसीए प्रथम वर्ष

उम्र

आज मुलाकात हुई
जाती हुई उम्र से
मैंने कहा जरा ठहरो तो
वह हंसकर इठलाते हुए बोली
मैं उम्र हूं ठहरती नहीं।
पाना चाहते हो मुझको
तो मेरे हर कदम के संग चलो
मैंने मुस्कुराते हुए कहा
कैसे चलूं मैं बनकर तेरा हमकदम
संग तेरे चलने पर छोड़ना होगा
मुझको मेरा बचपन ।
मेरी नादानी ,मेरा लड़कपन
तू ही बता दे कैसे समझैता करूँ?
दुनिया अपना लूं,
जहां है नफरते , दूरियाँ
शिकायतें और अकेलापन
मैं तो दुनिया ए चमन में
बस एक' मुसाफिर 'हूं।
गुजरते वक्त के साथ
एक दिन यूं ही गुजर जाऊंगी
करके आंखों को नम
कुछ दिलों में यादें बन बस जाऊंगी।

रोशनी .जी
बीएससी द्वितीय वर्ष

बढ़ते कदम

तू मेरी नन्ही सी बिटिया
रौशन हो गयी मेरी कुटिया
नन्ही नन्ही उँगली तेरे,छूते जब हाथों को मेरे
सपने लगते मेरे पूरे,बिन तेरे थे जीवन अधूरे |

तू बढ़ती जा,तू चलती जा
जीवन की रफ़्तार पकड़ती जा
आगे तेरे खुला आसमान है
पग के नीचे सागर महान है |

"तू प्रकृति है ", जीवनदयिनी
आकाश धारा है तुझमे समाई
तू ही सौरभ,तू ही गौरव
सुनती रहूँ बस तेरी कलरव |

तू न रुकना,तू न झुकना
तू न मुड़ना,तू न सहमना
तू बढ़ती चल पत्थर को तोड़े
मिले चाहे कितने भी रोड़े

राह तेरे बनते जाएँगे ,मंज़िल तुझको छूने आएँगे
एक बात सदा तू रखना याद,बनना जीवन में एक मिशाल
ब्रह्मांड तो है बहुत विशाल,
करता कोई एक कमाल

वो कमाल बस तुम हो !वो मशाल बस तुम हो !
वो असीम स्रोत,वो अन्हद बस तुम हो !
पहचान अपनी शक्ति,न करना कभी किसी की भक्ति |
शक्ति की बस होती है पूजा ,सर्वत्र तू है,बस तू ही है कोई और ना दूजा |

शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस 5 सितम्बर को हमारे पूर्व राष्ट्रपति ' डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ' के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में हर वर्ष मनाया जाता है।

कहा जाता है कि एक बार कुछ शिष्यों एवं उनके प्रशंसकों ने डॉ. सर्वपल्ली से 5 सितम्बर को उनका जन्मदिवस मनाने का आग्रह किया और तब उन्होंने कहा कि' मेरा जन्मदिन मनाने के बजाय सभी शिक्षकों को उनके महान कार्य एवं योगदान के लिए सम्मानित करना चाहिए। ' और तभी से विद्यार्थियों ने शिक्षकों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाना प्रारंभ कर दिया।

जिस तरह कुम्हार मिट्टी को अपने हाथों से आकार देकर उसके विभिन्न पात्र बनाता है उसी प्रकार शिक्षक भी अपने मिट्टी रूपी शिष्यों को अपने ज्ञान रूपी हाथों से उनके जीवन को आकार देते हैं तथा उन्हें इस काबिल बनाते हैं कि पूरी दुनिया में अंधकार होने के बावजूद वो अपनी मंजिल के रास्तों को स्वयं प्रकाशित कर सकें। अपने शिक्षकों के इस महान कार्य के बराबर हम उन्हें कुछ भी नहीं दे सकते। इसलिए हमें उन्हें कम से कम सम्मान और धन्यवाद तो देना ही चाहिए।

कवि कबीरदास ने भी अपने दोहों में गुरु को संबोधित करते हुए कुछ ऐसा कहा है - जब शिष्य के समक्ष गुरु एवं गोविंद) भगवान) दोनों खड़े हो तो शिष्य को पहले अपने गुरु के चरण छूने चाहिए क्योंकि गुरु ही उन्हें गोविंद यानी भगवान का दर्शन कराते हैं। अर्थात कबीरदास जी ने गुरु को भगवान से बढ़कर दर्शाते हैं।

शिक्षक दिवस हम सब के लिए एक सुनहरा अवसर है जिस दिन हम सब अपने शिक्षकों के प्रति अपना धन्यवाद एवं आभार व्यक्त कर सकते हैं और अपना सालाना एक दिन उनको समर्पित कर सकते हैं ।

कीर्ति
बी. बी. ए. प्रथम वर्ष

प्राचीन कवि सूरदास का जीवन परिचय

सूरदास जी वात्सल्य रस के सम्राट माने जाते हैं । उन्होंने श्रृंगार और शान्त रसों का भी बड़ा मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

" चौरासी वैष्णव की वार्ता " के आधार पर उनका जन्म रूनकता अथवा रेणु का क्षेत्र) वर्तमान जिला आगरान्तर्गता) में हुआ था। मथुरा और आगरा के बीच गऊघाट पर ये निवास करते थे। वल्लभाचार्य से इनकी भेंट वहीं पर हुई थी। " भावप्रकाश " में सूर का जन्म स्थान सीही नामक ग्राम बताया गया है। वे सारस्वत ब्राह्मण थे और जन्म के अन्धे थे।

" आइने अकबरी " में) संवत् 1653 वि. तथा " मुतखबुत तवारीख) के अनुसार सूरदास को अकबर के दरबारी संगीतज्ञों में माना जाता है।

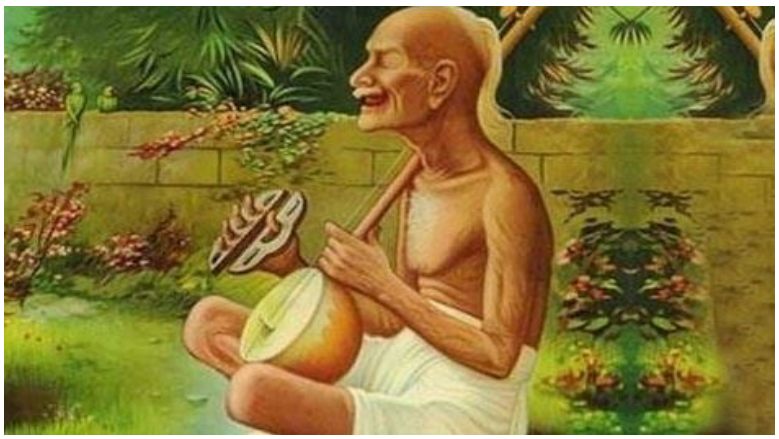

सूरदास की रचनाओं में निम्नलिखित पाँच ग्रन्थ बताए जाते हैं - सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य - लहरी, नल - दमयन्ती, ब्याहलो। उपरोक्त में अन्तिम दो ग्रंथ अप्राप्य हैं ।

डॉ. रेवा प्रसाद
हिन्दी विभाग

पाओलो कोएलो के मोटिवेशनल थॉट्स

और, जब आप कुछ चाहते हैं तो
पूरा ब्रह्माण्ड उसे हांसिल करने के लिए आपके मदद की साजिश करता है।
किसी से प्यार किया जाता है क्योंकि उससे प्यार किया जाता है.
प्यार करने के लिए किसी कारण की आवश्यकता नहीं होती I
हालांकि, जीवन का रहस्य सात बार गिरना और आठ बार उठना है I

sancharan is a Newsletter published from the **Department of Humanities - St. Francis de Sales College, Electronic City, Bengaluru - 560100.** It highlights the activities of the department and serves as a link between the department as well as other colleges.

You are welcome to send your suggestions and feedback to sfsnewsletters@gmail.com

Editorial Board : Fr. Jijo Manjackal, Prof.Tison,
Design and Layout : Mr. Richie Raju.